5

अनोखी सूझ

बात पुराने जमाने की है। उन दिनों देवताओं और दानवों में युद्ध होता रहता था। दोनों पक्ष मिलकर एक बार प्रजापति के पास गए। वहाँ जाकर बोले – ''मान्यवर ! हम दोनों ही आपकी संतान हैं। बताइए कि हम दोनों में बुद्धि में कौन बड़ा है ?''

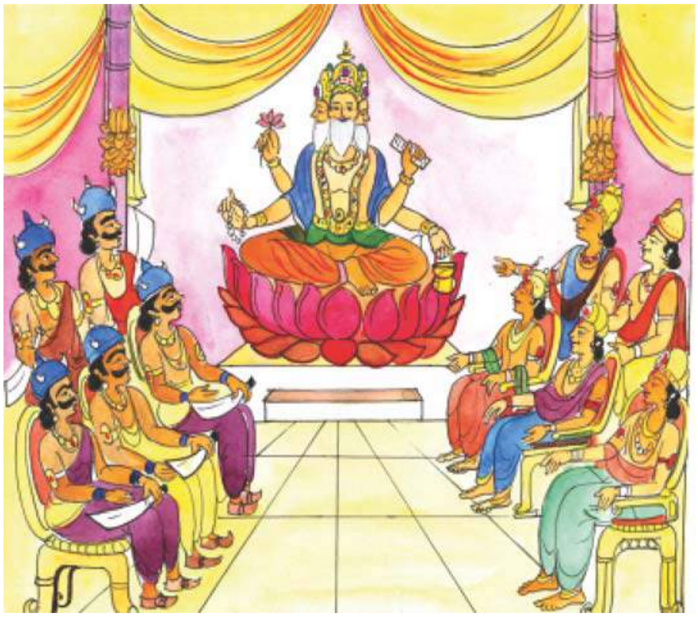

उनकी बात सुनकर प्रजापति मुस्कुराए। मन में सोचने लगे– ''किसे बड़ा बताऊँ !

देवताओं को या दानवों को ? देवताओं को बड़ा बताता हूँ तो दानव नाराज होते हैं। दानवों को बड़ा बताता हूँ तो देवता नाराज होते हैं। हो सकता है तब दोनों आपस में लड़ने लगें।''

बड़ा टेढ़ा प्रश्न था। बड़ा बताएँ तो किसे बताएँ। कुछ सोच कर वे बोले– ''इसका उत्तर कल दूँगा। आप दोनों ही कल मेरे यहाँ भोजन पर आमंत्रित हो। भोजन के बाद बताऊँगा कि कौन बुद्धि में श्रेष्ठ है।''

दूसरे दिन दोनों पक्ष भोजन के लिए पहुँचे। दोनों को अलग–अलग कमरों में बिठाया गया। वहाँ मिष्ठान्न से भरे थाल भिजवा दिए गए। प्रजापति दानवों के कमरे में गए। उन्होंने कहा– ''आप लोग भोजन करें। शर्त यह है कि कोहनी को बिना मोड़े भोजन करना है।''

यही बात उन्होंने देवताओं से भी कही।

प्रजापति की बात सुन दोनों परेशान हुए। वे एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

समस्या थी खाएँ तो खाएँ कैसे ? कोहनी नहीं मुड़नी चाहिए। भोजन भी नहीं बचना चाहिए। प्रजापति की आज्ञा का भी पालन होना चाहिए।

देवताओं ने एक उपाय सोचा। कमरे के किवाड़ बंद किए। आमने–सामने बैठ गए। लड्डू उठा–उठा कर एक दूसरे के मुँह में देने लगे। कुछ देर में थाल साफ हो गया। सारे लड्डू समाप्त हो गए। न हो–हल्ला न शोरगुल। देवताओं ने शांतिपूर्वक भोजन किया।

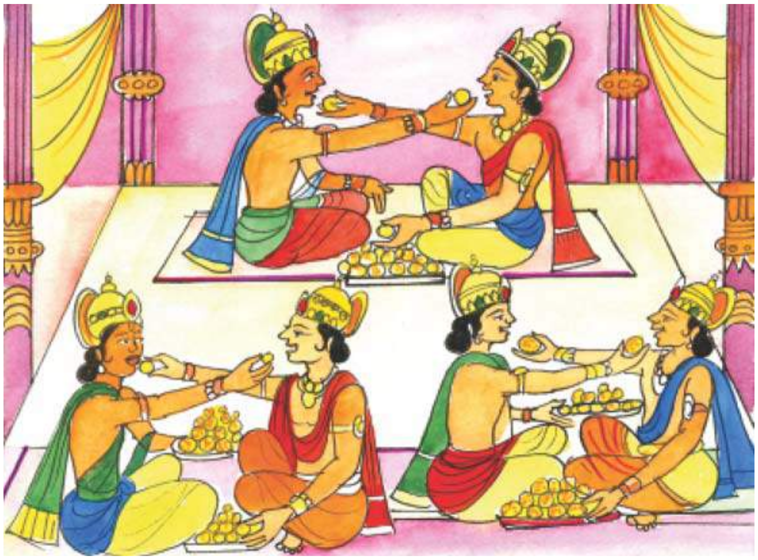

दानव अपने कमरे में परेशान थे। सोचने लगे– ''बेकार ही यहाँ आए। नहीं आते तो यह परीक्षा तो नहीं देनी पड़ती। आ ही गए हैं तो परीक्षा देनी ही पड़ेगी।''

दानवों ने भी किवाड़ बंद किए। लड्डुओं के थाल पर टूट पड़े। लड्डू लेकर ऊपर उछालने लगे। लड्डू जब नीचे आते तो मुँह खोल लपकते। लड्डू जमीन पर गिरते और चूर–चूर हो जाते। कमरे से हो–हो–ही–ही की आवाजें आती रही। चीखते–चिल्लाते और लड़ते–झगड़ते रहे।

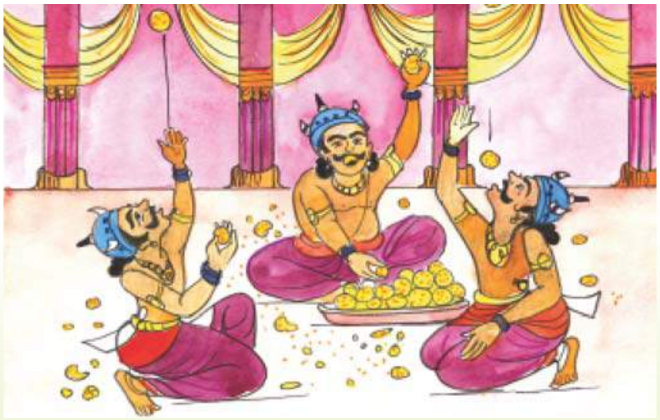

सारी स्थिति स्पष्ट थी। प्रजापति ने कहा– ''देवता ही श्रेष्ठ हैं। जानते हो क्यों ? इसलिए कि इन्होंने सहकार की भावना से काम किया है। खुद भी खाओ और दूसरों को भी खिलाओ। जिओ और जीने दो। यह थी इनकी विशेषता। इन्होंने बुद्धि से काम लिया। सूझ–बूझ दिखाई। ये आमने–सामने बैठ गए। एक दूसरे के मुँह में लड्डू देते रहे। थोड़ी देर में थाल साफ कर दिए।

दूसरी तरफ दानवों ने शर्त का पालन किया। लड्डू उछालते रहे। उन्हें पाने के लिए लपकते रहे। न खुद खाए न दूसरों को खाने दिए। लड्डू तो बिगड़े ही, पेट भी न भरा।

शिक्षण संकेत :–

जिसके पास बुद्धि है उसी के पास बल है। इसके लिए संस्कृत में एक सूक्ति है ''बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।'' इस पौराणिक कहानी में देवताओं के परीक्षा में सफल होने का यही आधार बताया गया है। शिक्षण के समय अन्य प्रसंग देकर भी बुद्धि की महत्ता और सूझबूझ को स्पष्ट किया जा सकता है। विशेषकर विपत्ति के समय बुद्धि ही मनुष्य का साथ देती है। जीवनगत इस सत्य को अवश्य उभारें।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

मान्यवर – सम्मान सूचक सम्बोधन
ब्रह्मा – प्रजापति, सृष्टि रचने वाला
शांतिपूर्वक – शांति के साथ
मिष्ठान्न – मिठाई, मीठा अन्न
मुँह ताकना – देखते रहना
टूट पड़ना – झपटना

उच्चारण के लिए

मान्यवर, प्रजापति, आमंत्रित, मिष्ठान्न

सोचें और बताएँ

1. प्रजापति किसे कहा गया है ?
2. पहले दिन प्रजापति ने देवता और दानवों को क्या उत्तर दिया ?
3. देवताओं और दानवों ने प्रजापति से क्या प्रश्न किया ?

लिखें

1. दिए गए शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें
   (श्रेष्ठ, दूसरों, खुद, लपकते, परीक्षा)
   (क) भोजन के बाद बताऊँगा कि कौन बुद्धि में .... है ?
   (ख) आ ही गए हैं तो .... देनी ही पड़ेगी।
   (ग) वे उन्हें पाने के लिए .... रहे ।
   (घ) .... भी खाओ और .... को भी खाने दो।
2. नीचे दिए गए वाक्य सही होने पर (✓) व गलत होने पर (✗) का निशान लगाएँ
   (क) देवताओं और दानवों में युद्ध होता रहता था। ( )
   (ख) देवता और दानव दोनों को एक ही कमरे में बैठाया गया। ( )
   (ग) प्रजापति ने बिना शर्त भोजन करवाया। ( )
   (घ) देवता परीक्षा में श्रेष्ठ निकले। ( )
3. प्रजापति ने भोजन करने के लिए किनको आमंत्रित किया ?
4. प्रजापति ने भोजन करने की क्या शर्त रखी ?
5. देवताओं ने अपनी सूझ–बूझ कैसे दिखाई ?
6. शोरगुल कौन कर रहे थे और क्यों ?
7. प्रजापति ने किसको श्रेष्ठ बताया और क्यों ?

भाषा की बात

- 'टूट पड़ना' – एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है झपटना। इसी प्रकार नीचे लिखे मुहावरों का अर्थ बताएँ
  1. चूर–चूर होना।
  2. सूझ–बूझ दिखाना।
- प्रजापति दानवों के कमरे में गए।
  इस वाक्य में 'के' दानवों और कमरे का संबंध बता रहा है।
  का, के, की ये तीनों संबंध बताने के काम आते हैं।
- अब तुम पाठ में से वे पाँच वाक्य छाँटो, जिनमें का/के/की का प्रयोग हुआ हो ।

जहाँ एक संज्ञा शब्द का दूसरे शब्द के साथ संबंध बताया जाए उसे 'संबंध कारक' कहते हैं । इस संबंध को बताने वाले का/के/की को संबंध कारक चिह्न कहते हैं।

यह भी करें–

- इस पाठ की कहानी का मंचन अपनी कक्षा में करें।
- अपनी कक्षा को दो भागों में आमने–सामने बैठाएँ। चर्चा का विषय तय करें और एक समूह दूसरे से तय विषय पर कोई सवाल करें। उसके सामने वाला बच्चा उत्तर दे। यह क्रम बारी–बारी से पूरा करें। बाद में उत्तर देने वाला समूह प्रश्न करे और दूसरा समूह उत्तर दे। बीच–बीच में विषय बदला जा सकता है।

मेरा संकलन

सूझ–बूझ को स्पष्ट करने वाली कोई अन्य कहानी 'मेरा संकलन' में लिखें।

> ज्ञानीजन विवेक से सीखते हैं, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी पुरुष आवश्यकता से और पशु स्वभाव से।
> –कौटिल्य